e-ISSN: 2319-8753 | p-ISSN: 2347-6710

IJIRSET
International Journal of Innovative Research in
SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

INTERNATIONAL JOURNAL OF INNOVATIVE RESEARCH

IN SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

Volume 12, Issue 4, April 2023

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

Impact Factor: 8.423

9940 572 462 6381 907 438 ijirset@gmail.com www.ijirset.com

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology (IJIRSET)

|e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.423| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 12, Issue 4, April 2023 ||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2023.1204155 |

शिवानी के उपन्यासों में स्त्री विमर्श

मोनी, पीएच०डी० (शोधार्थी)

हिन्दी विभाग, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय कुरुक्षेत्र

साहित्यकार का जीवन साधना का जीवन है। वह दीये की भाँति स्वयं जलकर दूसरों को प्रकाश देता है। शिवानी हिन्दी साहित्य की एक सशक्त लेखिका है। उनका पूरा नाम गौरा पंत शिवानी है। शिवानी ने हिन्दी साहित्य की लगभग सभी विधाओं के माध्यम से समाज के यथार्थ को प्रस्तुत किया है। शिवानी का सम्पूर्ण उपन्यास साहित्य सामाजिक-संस्कृति का आदर्श रूप प्रस्तुत करता है। शिवानी के उपन्यासों के नारी पात्र सामाजिक विमर्श को नया आयाम देते हुए नयी चेतना, नयी उमंग, ऊर्जा और जीवन में कुछ कर गुजरने की आकांक्षा से युक्त हैं।

पर्वतीय क्षेत्रों का ग्रामीण जीवन संघर्ष पूर्ण एवं अभावग्रस्त होता है। कृषि एवं भवन निर्माण के लिए उपयुक्त भूमि क्षेत्र, दूध-दही के लिए गाय, भैंस, बकरियां, हल जोतने के लिए एक जोड़ी बैल; यही ग्रामीण लोगों के जीवन की मूलभूत आवश्यकता होती है। पहाड़ी लोकजीवन में कृषि कार्यों में पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों पर अधिक कार्यभार होता है। स्त्री गृहस्थी के अतिरिक्त कृषि, पशुचारण तथा आजीविका के साधनों में अपना दायित्व निभाती है। वह पुरुषों के साथ पहाड़ की चोटी पर से घास व लकड़ी काट कर पीठ पर लादकर लाने तक का कार्य करती है। पहाड़ों में स्त्री का जीवन बड़ा संघर्षमय है। शिवानी मूल रूप से कुमाऊँ की रहने वाली है। अतः पर्वतीय नारी के जीवन का उतार-चढ़ाव यह भली-भाँति जानती है। इसलिए उनके साहित्य में इनके जीवन के विविध रूपों का चित्रण किया गया है। शिवानी के 'मायापुरी' उपन्यास में शोभा के पिता की मृत्यु के बाद लखनऊ से शोभा की माता अपने बच्चों को लेकर गाँव आ जाती है तथा अपने गहने बेचकर एक जोड़ी बैल खरीद कर अपने बच्चों का पालन-पोषण करती है। "शोभा की माँ अत्यन्त निरीह स्वभाव की है। धीरे-धीरे उसने गहने बेचकर एक जोड़ी बैल खरीद लिए और वर्षो से बंजर जमीन को जोतकर ठीक बना लिया। तीनो लड़के स्कूल जाने लगे।"[i]

शिवानी के उपन्यासों के स्त्री पात्र पितृसत्ता को चुनौती देते नजर आते हैं। शिवानी के 'मायापुरी' उपन्यास में तिवारी जी की बेटी सविता अपने पिताजी के साथ सार्वजनिक सभाओं में जाकर पुरुष सत्ता समाज में अपनी उपस्थिति को दर्ज करवा रही थी। "वह पिता के साथ सार्वजनिक सभाओं में जाती। पिता के गले में पड़ती मालाएं व तालियां की गड़गड़ाहट उसकी नस-नस में व्याप्त हो गई। वह तर्ज ज्वर से मदोन्मत और गर्वीली ढींगें भरने लगी।"[ii] इसी तरह 'भैरवी' उपन्यास की राजेश्वरी व मिसेज खन्ना पितृसत्तात्मक समाज को पीछे छोड़कर; वे दोनों

|e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.423| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 12, Issue 4, April 2023 ||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2023.1204155 |

विधवा होते हुए भी स्कूल को चलाती हैं तथा उस समाज का डटकर मुकाबला करती है, जिसमें नारी को कमजोर माना जाता है। "स्कूल चला और चलते-चलते कॉलेज बन गया और उसी कॉलेज के साथ-साथ कदम रखती चल पड़ी स्वयं दुःसाहसिनी राजराजेश्वरी। स्कूल की प्रिंसीपल थी प्रौढ़ा मिसेज खन्ना। उन्होंने स्वयं बाल वैधव्य की पीड़ा को यथार्थ भोगा था, अपने फटे पैरों की बिवाई ने उन्हें पराई पीर की अनुभूति करा दी। स्वयं उन्होंने वैधव्य से मोर्चा लेकर बुरी तरह पछाड़ दिया था। सुने मन और चीखते समाज से लोहा लेने को सारे दाँव-पेंच उन्होंने अपनी इस प्रतिभावान शिष्या को भी सिखा दिये और फिर अपने अखाड़े में खींच कर गाड़ बाँध दिया।"[iii]

स्त्री के आत्मनिर्भर होने से आर्थिक रूप से परिवार में परिवर्तन आता है, लेकिन स्त्री बाहर व घर दोनों जगह अपना दोहरा दायित्व निभाती है। कमाने वाली को घर के कार्य का बोझ भी उठाना पड़ता है। अतः उसका दोनों ओर से शोषण होता है। शिवानी के उपन्यास 'चल खुसरो घर आपने' में कुमुद के दोहरे दायित्व को दर्शाया है। वह अकेली ही घर की सारी जिम्मेदारी निभाती है, लेकिन कठोर परिश्रम के बाद भी उसके भाई-बहन न तो उसका आभार मानते हैं और न ही उसको कोई आदर देते हैं। उलटे दोनों पथभ्रष्ट होकर कुमुद के सपनों पर पानी फेर देते हैं, फिर भी वह अपने दायित्व का निर्वाह बखूबी निभाती है। "उदण्ड भाई अबाध्यता छोटी बहन का निर्लज्ज आचरण, निरीह अम्माँ की विवशता किसी को भी क्षमा नहीं कर पा रही थी। यह सब न होता तो शायद अपना लखनऊ न छोड़ती। उस अन्धकारमयी निर्जन सड़क पर तेजी से भागी जा रही कार में बैठी कुमुद की आँखें छलक आई। उसके बिना अम्मा कितनी असहाय हो उठेगी! कौन उसका राशन लाकर रखेगा, मकान का किराया, बिजली का बिल, पिता की पेन्शन, उसका सब काम कौन करेगा?"[iv]

शिवानी के उपन्यास 'मायापुरी' में शोभा मंजरी को स्टेशन जाने से मना करती है। परन्तु मंजरी जबरन अपनी साड़ी पहनाकर उसको तैयार करती है। साड़ी पहनकर जब शोभा गोदावरी मौसी के पास जाती है तो सोचती है कि मौसी ये समझेगी कि मैंने निकालकर स्वयं ही पहनी होगी लेकिन शोभा दोनों के प्रति अपने दायित्व का निर्वहन करना चाहती है। "शोभा पानी का गिलास लेकर आई तो लज्जा से आँखें गोदावरी की ओर देख न सकी। अभी उसके बाल भी खुले थे; जाते समय मंजरी उसे जिद करके अपनी धानी कश्मीरी सिल्क की साड़ी पहना आई थी। छिः छिः मौसी समझेगी उसी ने निकालकर पहनी है।"[v]

'कालिंदी' उपन्यास में अन्ना के पिताजी की मृत्यु हो जाती है, तो उसकी दादी अपने पुत्र की समृद्धि को ज्यों का त्यों बनाए रखती हैं। घर के साथ-साथ बाहर का भी सारा काम अकेले संभालती है। अपने पोतों को भी पढ़ने के लिए बाहर भेजती है। "पड़ी-लिखी न होने पर भी अन्ना की दादी बड़ी दबंग महिला थी। उन्होंने दो-तीन नौकर रख लिए, पुत्र की समृद्धि को तिलमात्र भी नहीं खिसकने दिया बुढ़िया ने, 'महेन्द्र तो हमारे लिए कपूत ही सिद्ध हुआ है छोकरों, पर दोनों को बाप की नाक ऊँची रखनी है। तुम यहाँ पढ़ाई पूरी कर लो, फिर तुम्हें इलाहाबाद

|e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.423| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 12, Issue 4, April 2023 ||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2023.1204155 |

भेजने का जिम्मा मेरा। मैं दूँगी पूरा खर्चा और याद रखो, तुम्हें अपनी इस दीदी और भानजी को जन्म-भर आश्रय देना है, अपने बड़े भाई की तरह अपनी बहुओं के लहँगों के तम्बू में सिर मत छिपाना।"[vi]

हमारे समाज में रूढ़िवादिता की जड़े बहुत गहरी है। प्राचीन काल से ही स्त्री को अपनी पवित्रता के लिए अग्नि परीक्षा देनी पड़ती थी। आज भी वही रूढ़िवादिता कायम है, उसे अपनी पवित्रता के लिए सबूत देने पड़ते हैं। 'भैरवी' उपन्यास में राजेश्वरी कुन्दन के साथ चली जाती है, तो पर्वतीय समाज उस अपराध को क्षमा देने के लिए उससे अग्नि परीक्षा मांगता है। "वह मूर्ख पुत्री ने अपने ही हाथों से व्यर्थ करके रख दिया। पहाड़ में अब कोई भी वैश्या-पुत्र के साथ भाग चुकी, उस नादान किशोरी के बचपन को क्षमा दान नहीं दे पाएगा। सरल पर्वतीय समाज की दृष्टि में उसका अपराध जघन्य था। अब कौन विश्वास करेगा कि तिवारी जी की बेटी पवित्र है? कौन-सी अग्नि परीक्षा अब उसे समाज में प्रवेश-पत्र दे सकेगी।"[vii]

स्त्री के अनेक रूपों में माता का रूप गौरवमयी है। स्त्री की पूर्णता उसके मातृत्व रूप में मानी जाती है। 'चौदह फेरे' उपन्यास में मल्लिका जो कि सौतेली माँ होकर भी वह अपनी पुत्री अहल्या का उतना ही ध्यान रखती है जितना की एक जन्म देने वाली माँ जब अहल्या की छुट्टी खत्म हो जाती है और वह स्कूल के लिए चली जाती है तो वह उसकी चिन्ता में रात-रात भर बैठी रहती थी। जब उसका पत्र आने में एक दिन का विलम्भ हो जाता तो वह पागलों की तरह चक्कर लगाने लगती। "अहल्या की छुट्टियां खत्म होती तो अहल्या का चेहरा लटक जाता जिस बच्ची से रक्त-मांस का कोई रिश्ता नहीं था, उसी के लिए वह कभी रात-भर बैठी रहती। क्या पता बीमार पड़ गई हो। स्विमिंग भी तो सीखती थी, कहीं डूब-डाब ही न जाए। एक आध दिन भी पत्र आने में विलम्भ होता तो वह पागलों की तरह चक्कर लगाती रहती। अहल्या की स्कूल की प्रगति में कर्नल सन्तुष्ट थे। वह बड़ी प्यारी-प्यारी चिट्ठियां लिखती थी जिन्हें लाल रिबन से बांधकर मल्लिका अपने सेंट से सुवासित हाथी दांत के शृंगारदान में सहेजकर रखती थी।"[viii]

शिवानी के उपन्यासों में एक बेटी का अपनी माँ के प्रति प्रेम के रूप को भी देखा जा सकता है। 'मायापुरी' उपन्यास में जब शोभा की माता अपने बच्चों के पालन-पोषण के लिए खेतों का काम करती है तो शोभा अपनी माता के कपड़े धोती है व उसके उपवास के लिए आलू भी भूनती है। "शोभा ने माँ की मोटी धोती धोकर धूप में डाल दी। आज माँ खेत से देर से आयेगी और फिर तभी उसे स्मरण हो गया, आज माँ का एकादशी का व्रत भी तो है । तीन-चार दाने आलू के उसने छिपी आग में भूजने को डाल दिए और उधेड का मोजा बुनने बैठ गई।"[ix]

भारतीय समाज में भाई-बहन का रिश्ता बहुत ही पवित्र माना जाता है। नारी जीवन का एक कोमल पक्ष बहन के रूप में प्रकट होता है। शिवानी के उपन्यास 'मायापुरी' में शोभा अपने छोटे भाईयों का एक माँ की भाँति

|e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.423| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 12, Issue 4, April 2023 ||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2023.1204155 |

ध्यान रखती है। उन्हें स्कूल के लिए तैयार करती है। जब वे उसे परेशान करते हैं तो उन्हें झुंझलाकर डाँट भी देती है कोई कहता है मेरी चोटी बाँध दो, दूसरा कहता है मुझे रोटी दे दो। "दीदी मेरी चुटियां बाँध दो, दीदी बासी रोटियां कटोरदान से निकाल लाओ ना जल्दी से। मेरी टोपी कहां है? हाय अब मैं नंगे सिर स्कूल कैसे जाऊंगा? पहाड़ी समाज में स्कूल में नंगे सिर जाने का मतलब होता है अध्यापक द्वारा कठोर चपेटाघात और कर्णमर्दन। तीनों भाईयों से अकेली निबटती शान्त शोभा भी धैर्य खो बैठती है; मर क्यों नहीं जाते तीनों छोकरे, देखते नहीं हो चाय बना रही हूँ। वह झुंझलाकर कहती दीदी की एक डांट से तीनों थोड़ी देर के लिए सहमकर चुप हो जाते और अपने हिस्से की चाय कलई के गिलास में गुटकने लगते हैं। शोभा ने कटोरदान में रोटियां निकाल गुड़ की डली रख भाइयों को दे दी।"[x]

अतः कहा जा सकता है कि शिवानी ने अपनों उपन्यासों में स्त्री जीवन से जुड़ी तमाम समस्याओं को उजागर करने का प्रयास किया है।

---

[i]. शिवानी, मायापुरी, पृ० 8

[ii]. वही, पृ० 15

[iii]. शिवानी, भैरवी, पृ० 48

[iv]. शिवानी, चल खुसरो घर आपने, पृ० 11

[v]. शिवानी, मायापुरी, पृ० 27

[vi]. शिवानी, कालिंदी, पृ० 11

[vii]. शिवानी, भैरवी, पृ० 45

[viii]. शिवानी चौदह फेरे, पृ० 35

[ix]. शिवानी, मायापुरी, पृ० 7

[x]. वही, पृ० 7

INNO SPACE
SJIF Scientific Journal Impact Factor
Impact Factor: 8.423

doi crossref

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

निस्केयर NISCAIR

INTERNATIONAL JOURNAL OF INNOVATIVE RESEARCH

IN SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

9940 572 462 6381 907 438 ijirset@gmail.com

Scan to save the contact details